आओ चलें सम्पूरणता की ओर

❍ 25 / 11 / 14 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

✺ शिवभगवानुवाच :-

➳ _ ➳ रोज रात को सोने से पहले बापदादा को पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो धरमराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

∬1∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:-10)

➢➢ **मैं आत्मा नष्टोमोहा हूँ ।**

∬2∬ गुण / धारणा पर अटेंशन (Marks:-10)

➢➢ **लोकिक अलोकिक जीवन में सदा न्यारे**

∬3∬ बाबा से संबंध का अनुभव(Marks:-10)

➢➢ **टीचर**

∬4∬ होमवर्क (Marks:- 7*5=35)

‖✓‖ °सर्व बोझ बाप को° देकर हलके हुए ?

‖✓‖ बुधीयोग °सिर्फ एक बाप° के साथ रहा ?

‖✓‖ °सहज्योगी° बनकर रहे ?

‖✓‖ "हम °आत्मा भाई-भाई° हैं" - यह स्मृति रही ?

‖✓‖ °ज्ञान रत्नों का दान° किया ?

‖✓‖ सब कुछ °सहन° किया?

‖✗‖ °उल्टे सुलटे संकल्प व विकप्ल° तो नहीं चलाये ?

✺ अव्यक्त बापदादा (05/11/2014) :-

➳ _ ➳ वाह दीपक बच्चे वाह! आप लोग भी अभी-अभी जगे हुए रूप से अनेक अपने भक्तों को साक्षात्कार करा रहे हैं । द्वापर से लेके आपके भक्त भी कितने होंगे! चाहे आपके रूप को जानें न जानें लेकिन उन्हों को ड्रामा दिखा रहा है, हमारे दीपक राजे आ गये हैं । आप यहाँ साधारण रूप में बैठे हो लेकिन आपके भक्त आपको दीप के रूप में देख रहा है और बापदादा वाह बच्चे वाह के स्वरूप में देख रहे हैं । दीपराज और दीपकों का मिलन कितना सुन्दर है । बाप के दिल में वाह बच्चे वाह आ रहा है और बच्चों के दिल में वाह बाबा वाह आ रहा है ।

∬5∬ विशेष अभ्यास (Marks:-15)

➢➢ आज दिन भर दिल से "वाह बाबा वाह" निकलता रहा ?

∫∫6∫∫ ज्ञान मंथन (वरदान) (Marks:-10)

➢➢ लोकिक अलोकिक जीवन में सदा न्यारे बन परमात्म साथ का अनुभव करने के लिए हमें विशेष रूप से किन धारणाओ को धारण करना चाहिए ?

❋ सर्व संबंधों की अनुभूति एक बाप से करें । "मेरा तो एक शिव बाबा .. दूसरा न कोई" - यह स्मृति बनाए रखें ।

❋ आत्मा भाई-भाई की दृष्टि रखें ।

❋ मेरे को तेरे में परिवर्तित करें ।

❋ सब कुछ बाप के हवाले कर,स्वयं ट्रस्टी बन जाये।

❋ बाप को दी हुई चीज को कभी अपना ना समझे,दान करी हुई चीज पर कभी अपना अधिकार नहीं रहता।

❋ बाबा को अपना बच्चा बनाकर उन्हें अपना सबकुछ वील कर दें(वारिस बना दे)।

❋ हम वानप्रस्थी है अब हमें घर जाना है,यहाँ जो कुछ इन आँखों से दिखता है वह सब ख़त्म होने वाला है तो इससे दिल ना लगाये।

❋ दाता की देन दाता को अर्पण करदे और स्वयं तन,मन,धन से समपर्ण हो जाये।

∬7∬ ज्ञान मंथन (स्लोगन) (Marks:-10)

➢➢ विकारों रूपी साँपों को अपनी छैया बना सहजयोगी बनने के लिए हमें मुख्यत: किस पुरषार्थ पर विशेष रूप से अटेंशन देना चाहिए?

❋ दिन में बार-बार स्वदर्शन चक्र का अभ्यास कर विकारों रूपी साँपों की छैया बन सकता है।

❋ निर्विकारी, निरहंकारी बनने का पुरषार्थ करना चाहिए।

❋ देही अभिमानी बनने का अभ्यास करना चाहिए।

❋ सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा करने से।

❋ परचिन्तन, प्रदर्शन से मुक्त रहना चाहिए।

❋ सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना मन में रखने से।

❋ निमर्चित, निर्माण चित रहने का पुरषार्थ।

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले होमवर्क के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔